मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

एम० आर० भक्त
पी. एस. ई. (रीटायर्ड)

वर्ष 8	मंगलवार 10 नवम्बर 1981	संख्या 7

सत्संग परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज, मानवता मन्दिर, होशियारपुर ।

दिनांक 31-12-78

गुरु नाम मिला मुझ को प्यारा, राधास्वामी राधास्वामी ।
सब नामों से है यह न्यारा, राधास्वामी राधास्वामी ।
दल सहस कमल सुमिरन साधा, त्रिकुटि चढ़ ध्यान को आराधा,
सुन्न महासुन्न दुचिता जारा, राधास्वामी राधास्वामी ।
सुरत शब्द आगे मत अति है सुगम, कोई अधिकारी पाता है गम,
गुरु ने मुझे दिया मरम सारा, राधास्वामी राधास्वामी ।
जगमग जगमग ज्योती दमकी, ज्योति विचित्र घट में चमकी,
हुआ मगन जो देखा चमकारा, राधास्वामी राधास्वामी ।
दल सहस कमल घंटा बाजा, और शून्य में सरंग धुन गाजा,
त्रिकुटि में गरजा ऊंकारा, राधास्वामी राधास्वामी ।
ब्रह्माण्ड की थी यह त्रिलोकी, यह त्रिलोकी मैंने छोड़ी,

चौथे पद सुरत को गारा, राधास्वामी राधास्वामी।
चौथे पद नाम की धुन पाई, प्यारी धुन यह मुझको भाई,
सुनी उसे भंवर पद से पारा, राधास्वामी राधास्वामी।
सत्तलोक में तीन की गति प्रकटी,निरखी वहां सतगुरु की भृकुटी
सत्तगुरु मेरे हो गये रखवारा, राधास्वामी राधास्वामी।
लख अलख की शोभा बहु न्यारी गम अगम की महिमा थी प्यारी
ऊंचे चढ़ हो गया भव पारा, राधा स्वामी राधा स्वामी।
गुरु नाम की धुन पहचान लिया,प्रकाश में रूप को जान लिया
मिल गया काल से छुटकारा, राधास्वामी राधास्वामी।
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी मैं गाता हूं,
मैं तरा साथ सब को तारा, राधास्वामी राधास्वामी।

राधास्वामी! कर्म का चक्कर सबको लिए फिरता है। बुढापा है। 93 साल की आयु हो गई। काम करता हूं। क्या करूं ? बिना काम के शरीर भी नहीं रहता। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। यह शब्द जो पढ़ा गया, इसमें बहुत से नुक़ते हैं। अगर मैं यह समझूं कि किसी को गुरु, राम-राम नाम जपना बता देता है या किसी को कहता है कि अमुक नाम जप वह असल में वर्णात्मक नाम है, वह नाम नहीं है। वह तो केवल मन को इकट्ठा करने और मन से ऊपर जाने के लिए एक

साधन है। अब यद्यपि मैं राधास्वामी मत का हूं मगर मैं पक्षपाती और अहंकारी नहीं हूं। एक आदमी राधास्वामी नाम लेले, कोई हर्ज नहीं, राम-राम करके मन को इकट्ठा करले मगर जो असली चीज़ है, वह अपने अन्तर सुरत से शब्द को सुनना है। इसका नाम, नाम है। मन से और शरीर से नहीं। शब्द तो अनेक प्रकार के हैं। मगर असली शब्द कौनसा है, जो सुरत से सुना जाता है ?

आप लोगों को शायद पता न लगे कि सुरत क्या वस्तु है। सुरत वह वस्तु है जो हमारे अन्तर सब कुछ देखती है और साक्षी है। सब चीज़ नाश होने वाली हैं मगर वह चीज़ जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है उसका नाश नहीं है। आदमी बीमार होता है। बीमारी आती है और चली जाती है। आज धन आता है चला जाता है, गुरु स्वरूप आता है और चला जाता है। जो चीज़ आती है वह तो जायेगी, अभ्यासी तो सारा जीवन इसी खब्त में मर गये कि हमको यह दिखाई नहीं देता या हमने घण्टा शंख नहीं सुना। फिर मैं अपने आपसे पूछता

हूं क्यों फ़कीर चन्द ! तुम्हें वह नाम प्राप्त हो गया ? जहां तक मेरा अपना निजी अनुभव है, वह मानने को विवश करता है कि मैं उस नाम को समझ गया। कैसे समझा ? तुम लोगों से समझा, मैं इस आयु में आप लोगों को अपना सत्तगुरु मानता हूं। दया तो दाता दयाल की है, यह नहीं कि मैं दाता दयाल को छोड़ गया। उनकी दया है। यह काम जो मुझे दिया था, यह केवल इसीलिए दिया था कि मैं समझ जाऊं कि राधास्वामी नाम क्या वस्तु है, अब जब मैं अपने अन्तर जाता हूं तो मन को छोड़ जाता हूं। आज साढ़े नौ बजे जगाने पर उठा। मैं इतनी लम्बी समाधि कभी नहीं गया। होश ही नहीं आई। तो राधास्वामी नाम क्या हुआ ? सुरत से शब्द को सुनना। कोई आदमी बेशक ज़बान से राधास्वामी कहे या न कहे अगर वह सुरत से शब्द को सुनता है तो वह राधास्वामिया है और अगर कोई राधास्वामिया कहलाता है मगर उसे वह चौथे पद का नाम नहीं मिला और वहां नहीं पहुंचा तो वह राधास्वामिया या राधास्वामी मत का नहीं है। बिलकुल साफ बात है।

ग़लती में न पड़ना। जो हम मुंह से राधास्वामी-राधास्वामी कहते हैं यह नाम नहीं है, यह तो एक दूसरे को समझाने के लिए एक Technical शब्द है। इससे अधिक और कोई कुछ नहीं। राधास्वामी नाम वह है जो अजर अमर और अविनाशी है। वह कैसे ? मैं पहले राम और कृष्ण का ध्यान करता था। राम, कृष्ण आते थे और चले जाते थे। फिर मैंने दाता दयाल के रूप का ध्यान किया। रूप आता था चला जाता था। मगर वह चीज़ जो मेरे अन्तर रहती है और शरीर के बोध-भान, मन के विचार और आत्मा के आनन्द की साक्षी है अर्थात् watch करती है वह सदा अजर और अमर है। उसका अपने आप में वापिस जाकर अपने रूप में ठहर जाना, उस अवस्था का नाम राधास्वामी है, मैंने यह समझा है। मैं चाहता हूं कि अगर मैं ग़लत हूं तो ये वर्तमान राधास्वामी मत वाले मेरे सामने आकर बात करें। किताबों में मेरा खण्डन करदें,

मैंने प्रण किया था कि जो कुछ मुझे राधास्वामीमत से मिलेगा, मैं संसार को बता जाऊंगा।

सब नामों से है प्यारा, राधास्वामी राधास्वामी।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछना चाहता हूं कि क्या सचमुच राधास्वामी सब नामों से प्यारा है ? अब आप देखिये ! जितने आप नामधारिये नाम जपते हैं, कोई वाहे गुरु का नाम जपता है, कोई सत- श्री-अकाल यापांच नाम का सुमिरन करता है, उनसे पूछ देखो कि क्या वे नाम जो घण्टा, शंख, मृदंग तुम्हारे अन्तर प्रकट होते थे, क्या उनके सुनने से तुम्हें पता लग गया कि तुम अब संसार से पार हो गये ? सब मानेंगे कि हम नहीं हुए। मालिक से मैं प्रार्थना करता हूं कि दाता ! मुझे क्षमा करना। अगर मैं तेरे राधास्वामीमत के विरुद्ध कह रहा हूं। मैं राधास्वामीमत के विरुद्ध नहीं हूं बल्कि मैं राधास्वामीमत की यथार्थता को बता रहा हूं। जब तुम लोगों से सुना कि मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता, जो कुछ मेरे मन के अन्दर फुरना

फुरती थी, शब्द सुनते थे, प्रकाश देखता था, सब छोड़ गया। मगर वह चीज़ जो इन्हें देखती थी, वह अब भी मौजूद है। शायद इसीलिए ऋषियों ने कह दिया हो कि आत्मा अजर, अमर, और अविनाशी है। क्योंकि वह चीज़ सदा रहती है। वरना आत्मा के अर्थ इन गति और मनन के अर्थ सोचना है। जो चीज़ गति और मनन में रहती है वह आत्मा है। अगर हम कहें कि आत्मा एक है तो उत्साह नहीं पड़ता क्योंकि कितनी ही आत्माएं हैं। आप देखते हो कितने आदमी बैठे हुए हैं, सब आत्मस्वरूप हैं। इसलिए सन्तमत की शिक्षा का असली निचोड़ यह है। मैं जानता हूं जहां में बोलता हूं, संसार इसका अधिकारी नहीं है। मगर किसी पन्थ में शामिल होना हज़ारहा दर्जे अच्छा है सिवाय इसके कि धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का रहे। मगर हमें इन सन्तों ने धोबी का कुत्ता बना दिया। कैसे ? जो नाम की यथार्थता थी इस का तो हमें पता नहीं लगा और शेष जो हमारा देवताओं के मन्दिरों में जाना, पूजा पाठ करना इससे कुछ लाभ तो होता, वह इन सन्तों ने हमसे छुड़ा दिया और उनकी बजाय

अपना रूप पेश कर दिया कि हम भगवान् हैं, हम यह हैं और वह है, अगर भगवान् हैं तो उन पर विपत्ति क्यों आई ? कुछ कर दिखाते यह सब ढोंग है ।

राधास्वामी वह अवस्था है जहां हमें शरीर, मन और गुफा का कोई भी खेल दिखाई नहीं देता, सब कुछ छोड़ जाते है । बाकी जो कुछ रह जाता है उस अवस्था का नाम राधास्वामी है, मैंने ऐसा समझा है । मैंने आज दिन तक जो कुछ संसार को कहा, किताबों के हवाले नहीं दिये कि गीता यह कहती है, पुराण, रामायण, भागवत या पहली बादशाही यह कहती है । मैं दूसरों का अनुभव वर्णन नहीं करता । मैं वह कहता हूं जो मैंने अपने अन्तर देखा । अब मेरी पिछली अवस्था आ रही है ।

Semi Consciousness में रहता हूं । रात को भी Semi Consciousness रहती है । अन्तर जागता हूं बाहर की कुछ होश नहीं रहती । मैंने राधास्वामी नाम को यह समझा है । मैं आज यह सत्संग इसी विचार से दे रहा हूं कि अगर कोई

राधास्वामीमत का गुरु समझता है कि में ग़लती पर हूं तो मेरा खण्डन कर दे ताकि मुझे वास्तविकता को ग़लत ढंग से गुमराह् करने का दोष न लगे। मेरे साथ जो बीती है, मैं वह कहता हूं।

दल सहस कमल सुमिरन साधा, त्रिकुटी चढ़ ध्यान को आराधा।

जो आदमी संसार की इच्छाएं और आवश्यकताएं चाहते हैं। समृद्धिशाली बनना या कुछ चाहते हैं तो वे ऊपर न जायें। सहस्रदल कमल में अभ्यास किया करें जो तुम्हें तुम्हारी अपनी जात के लिए सांसारिक चीज़ें चाहिएं वे पूरी हो जायेंगी यह Ram है। त्रिकुटी में अभ्यास से आदमी को हर सूक्ष्म बात की समझ आती है कि यह बात ऐसे नहीं, ऐसे है। त्रिकुटी में अनुभव जागता है और हर चीज़ को समझने के योग्य हो जाता है।

सुन्न महासुन्न दुचिता जारा, राधास्वामी राधास्वामी।

त्रिकुटी में जब मूर्ति बन जाती है तो फिर उसे यत्न करने की आवश्यकता नहीं होती, वह जो स्वामी, सेवक और प्रेम की दशा होती है

उसमें से प्रेम का दर्जा कट जाता है। क्योंकि वह चीज़ उसके सामने आ जाती है उस अवस्था को हम सुन्न कहते हैं अर्थात् शरीर और मन की सारी इन्द्रियां सुन्न, खामोश हो जाती हैं। ये function अर्थात् काम नहीं करते और जब वह उस मूर्ति की ओर अधिक ध्यान देगा तो एक समय आयेगा वह मूर्ति दिखाई नहीं देगी। वह गायब हो जायेगी और अन्धेरा आ जायेगा। महासुन्न में अंधेरा होता है। यह मन ही सहस्र दल कमल, त्रिकुटी, सुन्न और महासुन्न है। यहां तक हर एक धर्म वाला पहुंच सकता है। चाहे किसी ढंग से पहुंचे। मगर अगर किसी को गुरु नहीं मिला हुआ है तो वह इससे आगे नहीं जा सकता। इससे आगे कौन पहुंचाता है? गुरु, वह कौन गुरु है? क्या फ़कीर चन्द गुरु है जो तुम्हें महासुन्न से आगे निकालेगा? नहीं। बाहर के गुरु ने तुम्हें संकेत करना है, कि हे दीवाने! यह महासुन्न तक जो तेरी समाधि लगी है, प्रेमी, प्रीतम और प्रेम हो तू ही हर जगह पर हो व सिवाय तेरे और कोई नहीं। मगर उस सेवक रूप को दर्शाने के लिए वह शब्दगुरु आता है, शब्द-योग सुरत से सुना जाता है। जो निचले शब्द

हैं वे मन और सुरत दोनों से सुने जाते हैं । मगर असली नाम वह है जो सुरत से सुना जाये ।

सुरत शब्द जोग अति है सुगम, कोई अधिकारी करता है गम ।

वह कहते हैं, यह बहुत सरल है । कोई अधिकारी हो जिसे इस चीज़ की इच्छा हो, वह इस चीज़ को शीघ्र प्राप्त कर सकता है ।

गुरु ने मुझे दिया मरम सारा, राधास्वामी राधास्वामी ।

सबके लिए नाम नहीं है । नाम की महिमा बड़ी है । मगर किनके लिए ? जो अधिकारी हैं और उसकी शर्तें क्या हैं ?

विषयों से जो होय उदासा, परमार्थ की जा मन आसा ।
धन, संतान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साध गुरु, जागे ।
जगमग जगमग ज्योति दमकी, ज्योति विचित्र घर में चमकी ।
हुआ मगन देखा चमकारा, राधास्वामी राधास्वामी ।

यह महासुन्न से आगे का दर्जा है, क्यों कि मन तो छूट गया । यह सन्तमत इतना सरल है अगर कोई समझ जाये तो । मगर उनके लिए नहीं है जो धन या संसार चाहते हैं :—

दल सहस कमल घण्टा बाजा,और सुन्न में रारंग धुन गाजा
त्रिकुटि में गरजा ऊंकारा, राधास्वामी राधास्वामी ।
ब्रह्माण्ड की थी यह त्रिलोकी यह त्रिलोकी मैंने छोड़ी
चौथे पद सुरत को मारा, राधास्वामी राधास्वामी ।

यह जो चौथे पद का नाम है मैं इसे आसान तरीके से समझाता हूं । तुम जागते, सोते और सुषुप्ति में जाते हो, इन तीनों से परे एक और अवस्था है जिसे हम तुरीया पद कहते हैं । वहां न आदमी जागता है, न वाखवर होता है और न वेखबर होता है । वह इन तीनों से बिलकुल अलग नहीं होता मगर इनके प्रभाव को छोड़कर जिसका सहारा लेता हैं वह चौथा पद है । इन गुरुओं के पास किस लिए भटकते फिरते हो अपनी सम्पत्तिएं खोते हो, नाक रगड़ते हो । तुम्हें क्या मिलेगा ? जो तुमने कर्म किये हुए हैं अन्त में भोगना पड़ना है । जब ये सन्त अपनी बीमारी को ठीक न कर सके तो तुम्हारी को कहां से ठीक करेंगे । यह जितना खेल है सब तुम्हारी माया, विश्वास और श्रद्धा का है और कुछ नहीं । मैं बिलकुल सच्ची बात बताता हूं :—

चौथे पद नाम की धुन पाई, प्यारी धुन यह मुझको भाई।

आदमी को चाहिए कि पहले कुछ दिन सत्संग करे। जब उसका मन नेकी की ओर अपने को ले जाये और रुचि हो जाये तो उसे यह नाम देना चाहिए। अगर तुम्हारा मन गन्दा है और तुम इस लिए नाम जपते हो कि तुम्हारी गन्दगी दूर हो जाये तो गन्दगी दूर हो जायेगी। नाम का तो यह प्रभात है कि जो नाम से मांगो, मिलता है। संसार ने इसके अर्थ और समझे। मैं यह कहता हूं कि जब तुम्हारे अन्तर ध्यान प्रकट होगा तुम्हारी बृत्तियां इकट्ठी होंगी, तुम्हारी विचारशक्ति बढ़ जायेगी। तुम्हें जो कुछ मिलेगा वह तुम्हारी विचार शक्ति के बढ़ने का फल मिलेगा न कि फ़कीर चन्द या और किसी गुरु ने तुम्हें देना है। मैं जो मुंह से बात कहता हूं यही मेरा नामदानहै। तुमको, मुझको जो कुछ मिलता है तुम्हारी Concentration एकाग्रता से मिलता है। फोटो ने कुछ नहीं देना, चाहें फोटो के सामने हज़ार बार मत्थे टेकते रहो।

सुनो उसे भंवर पद से पारा, राधास्वामी राधास्वामी।

मैंने तो सब कुछ आसान कर दिया । किसी भी गुरु के दरवाज़े पर जाकर नाक रगडने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें गुर बता दिया। अगर यह चाहते हो कि तुम्हारा आवागमन न हो तो जब तक इन्सान को यह ज्ञान नहीं कि मन, काल और माया का रूप है । जितना झगड़ा है तुम्हारे मन का है। इस मन को छोड़ो और इसके ऊपर जाओ वहां जाकर तुम्हें अपने रूप का अनुभव हो जायेगा और तुम इस संसार में काम करते हुए इस संसार के जाल में नहीं फंसोगे। जिसने मरना है वह मरेगा जिसने पैदा होना है वह पैदा होगा। किस बात की चिन्ता ! अपने कर्त्तव्य को पूरा करो मगर मोह में न आओ। जब तक ऐसा नहीं होगा कोई आदमी भी आवागमन से नहीं बच सकता, नहीं बच सकता, नहीं बच सकता ।

इस संसार में रहने के लिए वेदमार्ग है "शिव-संकल्पमस्तु" कोई परिश्रम करने,कानों में दो-दो घण्टे उंगलियां डालने की आवश्यकता नहीं है। अपना ऐसा विचार करो जिससे कि तुम्हारा अपना, तुम्हारे

परिवार, देश और पड़ोसियों का कल्याण हो, इस विचार को पकाओ। जब तुम ऐसा विचार पकाओगे तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा। सदा आशावादी रहो।

दाता दयाल ने भी गुरु की बहुत महिमा गाई है। गुरु नाम, ज्ञान, अनुभव और विवेक का है। क्योंकि जीव अल्प बुद्धि वाले होते हैं जिस प्रकार छोटे बच्चे होते हैं। उन्हें कुछ नहीं आता, जहां कोई दुःख हुआ मां की गोद में आये और मां उन्हें प्यार देती है। इस ढंग से अगर किसी गुरु ने चेलों के साथ व्यवहार किया है तो वह धन्य है। अगर इस ढंग से उसने नहीं किया और सम्पत्ति और डेरे बनाने के लिए किया तो वह पापी और दोषी है :—

सत्तलोक में बीन की गति प्रकटी, निरखी वहां सत्तगुरु की भृकुटि,
सत्तगुरु मेरे हो गये रखवारा, राधास्वामी राधास्वमी।

कौन सत्तगुर रखवारा हो गया ? या ऋषि जो रखवारा हो गया या कोई और गुरु रखवारा हो

गया ? वह जो ज्ञान तुमने गुरु से प्राप्त किया है कि संसार में तुमने कैसे रहना है और कैसे पार जाना है वह ज्ञान तुम्हारी रखवारी करेगा न कि कोई भी गुरु। मैं तुम लोगों को बिलकुल सच्ची बात बताता हूं।

सबसे पहली बात जो मैं संसार को बताना चाहता हूं वह यह है कि सन्तान को सन्तान के विचार से पैदा करो। किसी Family planning की आवश्यकता नहीं है। मगर हम कामी हैं। स्त्री हो पुरुष हो सब ही काम के विषय में फँसे हुए हैं। मेरा भाव यह है कि न धोबी के घर के हैं न घाट के हैं :—

लख अलख की शोभा बहु न्यारी, गम अगम की महिमा थी प्यारी,
ऊंचे चढ़ हो गया भव पारा, राधास्वामी राधास्वामी।

भव जीवन के होने को कहते हैं। जो हमारा जीवन, हस्ती है, जीवन और हस्ती के बोध-भान हैं, उनको छोड़ जाना ही भव पारा है या इन की ओर ध्यान न देना ही भव पारा है और मेरी समझ में कोई भव पारा नहीं आया। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। Research कभी समाप्त नहीं होती। जहां समाप्त होती है वह

अपनी ही Research है। अगर तुम किसी दूसरी चीज़ की Research करो तो कभी समाप्त नहीं होगी। अपनी Research करो समाप्त हो जायेगी।

गुरु नाम की धुन पहचान लिया, प्रकाश में रूप को जान लिया।
मिल गया काल से छुटकारा, राधास्वामी राधास्वामी ।।
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी मैं गाता हूं।
मैं तरा साथ सब को तारा, राधास्वामी राधास्वामी ।।

मैं इस काम से सुखी नहीं हूं। जीव बात को तो समझते नहीं बिना कारण व्यर्थ तंग करते हैं।

राधास्वामी नाम क्या है ?

पिण्ड अण्ड ब्रह्माण्ड से पारा, वह है देश हमारा ।।

पिण्ड शरीर, अण्ड मन और ब्रह्माण्ड इनसे परे मैं नहीं निकल सकता था। मैं बग़दाद में इस मन से ऊपर भी अभ्यास करता था और नीचे भी अभ्यास करता था। मगर अब मैं मन के चक्करों को छोड़ जाता हूं। नीचे अभ्यास की कोई आवश्यकता नहीं। मगर हां ! अगर संसार चाहते हो और तुम्हें संसार की आवश्यकता है तो तुम्हारे लिए पांच नाम हैं। पांच नाम की रट ज़बानी नहीं बल्कि सहस्रदलकमल में ठहरो, संसार की उन्नति प्राप्त

करो। फिर त्रिकुटी में अनुभव और ज्ञान प्राप्त करो। सुन्न में मस्ती लो। जहां तक मन का सम्बन्ध है ये दर्जे प्राप्त करने आवश्यक हैं। मैं ब्रह्माण्ड से परे तो जा ही नहीं सकता था। वहां मुझे आप लोगों ने पहुंचाया। अब सीधा ही प्रकाश और शब्द को पकड़ता हूं। हम सब एक चेतन के बुलबुले हैं। उसकी हिलोर से पैदा हुए हैं और उसी में रहते हैं। जैसे,

जल विच मीन प्यासी, मोहे सुन सुन आवे हाँसी।

लोग कहते हैं मालिक हम में रहता है। अब मैं कहता हूं कि हम मालिक में रहते हैं जैसे मच्छली पानी में रहती है।

नोट :— यह मेरे जीवन का अनुभव है। कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैंने समझा है, यही अन्तिम है। सारी आयु इन बाणियों और अभ्यास के जाल में फँसा रहा। मुझे तो सन्तमत के सच्चा होने का केवल इस एक विचार से विश्वास आया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। ये सब धर्म अपने मन के विचार हैं और जो मन से निकलता है उस तरीके का नाम राधास्वामी योग है अर्थात् सुरत से शब्द को सुनना।

सब को राधास्वामी।

परम दयाल फ़कीर सत्संग

मानवता मन्दिर,

होशियारपुर ।

दिनांक 19-7-81

सच्चाई

कब गुरु मिलिहौ सनेही आइ ।
लोभ मोह को जार बनो है, ता में रह्यो अरुझाय,
जाकी साची लगन लगी है, सो वा घर को जाइ ।
सुरत समानी सबद कुंड में, निरत रही लौ लाइ,
पिया बिना यों प्यारी तलफै,तलफि तलफि जिय जाइ ।
चलो सखी वा देसै चलिये, जहां पुरुष को ठांइ,
हंस हिरंवर चंवर ढुरत हैं, तन की तपन बुझाइ ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो सबद सुनो चित लाइ,
नाम पान पाजो जो पावै, सो वा लोकै जाइ ।

आप लोग गुरु पूर्णिमा के सिलसिले में आये थे। मैं अपने आप से पूछता हूं फ़कीर चन्द! तूने यह क्या पाखण्ड का जाल बना लिया। जीवन किसी खोज में बीता व बचपन से सोचा करता था कि प्रीतम को मिलूंगा, राम को मिलूंगा। अब जीवन ने पलटा खाया। मैं क्या कहना चाहता हूं? न कोई राम मिला, न कोई कृष्ण मिला और न ही कोई गुरु मिला। मेरा अपना मन स्वयं ही गुरु बनता था, वही शिष्य बनता था, वही राम बनता था, वही कृष्ण बनता था। यही मेरी समझ में आया। जो बात मैंने कही वह प्रत्येक व्यक्ति समझ नहीं सकता जब तक कि वह स्वयं न दौड़े। और जो कुछ मैंने कहा, वही कबीर साहिब तथा स्वामी जी ने भी कहा कि जिस प्रीतम के लिए मैं सारा जीवन भटकता रहा कि मुझे राम मिल जाये, मुझे यह मिल जाये, मुझे यह मिल जाये। बहुत कुछ किया परन्तु पहुंचा कहां? जहां न राम है, न रहीम है, न करीम है, न मैं है, न तू है। एक प्रकार की अवस्था आ जाती है मगर वहां तक कौन जाना चाहता है? केवल वह जिसको इस बात

का विश्वास हो गया है कि मन रूपी चक्कर में बास्तविक सुख व शान्ति नहीं है। यह बिलकुल सत्य बात है।

स्वामी जी ने भी प्रयत्न किया तथा अन्त में वह कहां पहुंचे ? जहां न तो खालिक न मखलूक और न ही खिलकत। जहां नाम नहीं, सत्तनाम नहीं, अनामी नहीं। कबीर साहिब ने भी यही बात कही:-

जहां पुरुष तहां कछु नाहिं, कहे कबीर हम जाना।

मेरे दिल में आया कि मैं भी राम की खोज में चला था। बहुत तमाशे देखे मगर जब से मुझे मन व माया के रूप का अनुभव हुआ तो मेरे जीवन ने पलटा खाया तथा तब मैं मन को छोड़ कर उस राम को ढूंढ़ने चला। आगे प्रकाश और शब्द है। उसमें उसको ढूंढ़ता हूं, जो प्रकाश को देखता तथा शब्द को सुनता है। वहां जाता हूं तो न मैं, न तू। यह अन्तिम अवस्था है।

मगर आप तो संसारी हैं। संसार के चक्कर में आये हुए हैं। आप दुनिया चाहते हैं, आनन्द चाहते

हैं और प्रसन्नता चाहते हैं, उनको प्राप्त करो। उसके लिए जिसे तुम चाहते हो अपना एक इष्ट बना लो व जो भी चाह रखते हो वह इच्छा रख कर मन को एकाग्र किया करो और अपने आप को उसके समर्पित करते रहो। जितना तुम अपने अन्तर में प्रेम करोगे तुमको उतना ही लाभ होगा और कहीं फ़कीर चन्द या किसी भी गुरु के पास जाने की आवश्यकता नहीं। बाहरी गुरु वही है जो जीव को अपने अन्तर में ही विश्वास करा दे अर्थात् जो जीव को बहिर्मुखता से छुड़ा कर उसको अन्तर्मुखी कर दे। गुरु या राम सब कुछ तेरे मन के अन्दर है। तू गाफ़िल (असावधान) होकर बाहरी रूप में अपने आपको किसी के आधीन करके पूजा करता है। खेद ! यह राज़ या भेद जीव को पता लग जाता तो दर-2 भटकते न फिरते। मगर मन इतना भ्रमी है कि अन्तर नहीं ठहरता। सन्तों के मार्ग में पूर्ण गुरु की यही महिमा है कि सत्तगुरु या मालिक का विश्वास उनके अन्तर करा दे। वह प्रत्येक व्यक्ति के अन्तर रहता है।

घर में घर दिखलाय दे, सा सत्तगुरु पुरुष सुजान ।

सत्य बात तो यह है कि मैं गुरु आदि कुछ नहीं। गुरु तो ज्ञान और समझ का नाम है। सत्तगुरु सच्चे ज्ञान का नाम है। वही मैं आपको बताता हूं। मैं आप लोगों की आंखों में धूल डालना नहीं चाहता और न ही अपने जाल में फँसाना चाहता हूं। पूर्णत: सत्यता बताता हूं कि जो कुछ तुम को मिलता है, मिलेगा या मिल चुका है वह आपका अपना कर्म है। अपने कर्म को ठीक करो । इस विश्वास में मत रहो कि तुम बाबा फ़कीर या किसी गुरु या राम की माला फेरते हो तो तुम्हारा कल्याण होगा। नहीं होगा । मैंने देखा कि जब हर धर्म वाले यह बड़े-बड़े महात्मा और सन्त भी संकटों से नहीं बचे तो प्रमाणित हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना-अपना कर्म मिलता है । इसलिए, ऐ मानव ! राम नाम बेशक न जप, तू अपनी नीयत को साफ रख। अपने स्वार्थ के लिए किसी के साथ धोखा, फ़रेब, चार सौ बीस तथा हेराफेरी मत कर, यह मेरी समझ में आया है। यह बहरा है। मैंने यह काम बड़े दर्द दिल से किया है। सत्य पूछते हो हम

जो यह समझते हैं कि हमको देवी देती है, कृष्ण देता है, गुरु देता है यह सब कोई नहीं देता। जो कुछ किसी को मिलता है वह उसका अपना प्रेम है अपना ही विश्वास और अपनी ही श्रद्धा है। उसी का फल मिलता है। आपको मैं प्रतिदिन अपने अनुभव सुनाता हूं। पत्र आते हैं, लोग मेरे रूप का ध्यान करते है, मांगते हैं, मेरा रूप उनकी सहायता करता है। इस प्रकार यह अपने विश्वास से ले लेते हैं। मेरे तो वाप को भी मालुम नहीं होता और न ही मैं कहीं जाता हूं। मैं यह भेद बता चला हूं। इस भेद को दर्दे दिल में रख कर इन गुरुओं ने, इन महात्माओं ने, इन धर्म वालों ने हम गृहस्थियों को लूटा है। अज्ञानता में रख कर हमारी दौलतों से अपने आश्रम बनाये हम गृहस्थियों को कोई सच्चाई नहीं बताई। हम व्यक्तियों के अ..न का व्यर्थ लाभ उठाया तथा ग़लत ढंग से अपने पीछे लगाया। मैं स्वयं लुट गया था। यह और बात है कि मेरे गुरु स..म र्यशाली थे उन्होंने मेरा ढाई हज़ार रुपया मेरी पत्नी को प्रसाद में दे दिया। साढ़े तीन हज़ार बैंक में जमा करवा दिया और बीस हज़ार रुपया बीस वर्ष पश्चात् मेरी पत्नी को

दे गये । मगर मैंने तो जो दिया वह इसी जज़बे में दिया कि मैं सेवा करूंगा तो मुझे कुछ मिल जायेगा। क्या दूसरे गुरु वापिस देते हैं ? वह तो हड़प कर जाते है । मैं तुम लोगों को इस अज्ञान में रख कर कि मैं तुम्हारे भीतर प्रकट होता हूं या मेरे प्रसाद से उसके बच्चा हो गया या मरते समय किसी को ले जाता हूं इस प्रकार मैं तुम लोगों की आंखों में धूल डाल कर पैसा लेना नहीं चाहता । हां ! ज्ञान दाता की हैसीयत में इसके बदले में अगर तुम मेरी खिदमत (सेवा) करना चाहते हो तो दो । मैं इसका अधिकारी हूं ।

इन्दौर वाली माई की तरफ़ इशारा किया । माता ! समझती है ? अब तू मुझे लाख दे दे मुझे शोक नहीं होगा, मैं सत्तपुरुष हूं । मैं अनामी धाम से इस संसार में सच्चाई बताने के लिए ही आया हूं । कि मेरे ग्रह ही ऐसे हैं । मेरे हस्त की रेखाएं ही ऐसी हैं ।

सच्चाई क्या है ? कि प्रत्येक व्यक्ति जो इस संसार में आया उसको अपने पिछले जन्मों के

कर्म अनुसार ओर इस जन्म के कर्म अनुसार भुगतना पड़ता है। लाख तुम राम को याद करो या परमात्मा को याद करो जो तुमने कर्म किये हुए हैं वे कट नहीं सकते, उनका प्रभाव तुम पर पड़ेगा, पड़ेगा, पड़ेगा। यह दूसरी बात है कि वह किसी सूरत में थोड़ा पड़े या आपको ज्ञान है तो प्रभाव पड़ने पर तुम उसकी परवाह नहीं करोगे। यहां तक तो मैं मान लेता हूं। अत: मैं कहता हूं कि ऐ इन्सान ! तुम क्या करते हो, तुम सोचो, तुम्हारे घरों में क्या होता है ? तुम्हारी एक दूसरे से घृणा है, द्वेष है। लड़के की पिता से नहीं बनती और पिता की लड़के से नहीं बनती। पति, पत्नी की नहीं बनती। विवाह हो जाते हैं। पत्नियां तलाक़ दे देती हैं। फिर तुम यह आशा करो कि तुमको इस संसार में सुख मिलेगा यह ग़लत है। वेशक तुम परमात्मा के सामने पुकार करो तुम को शान्ति नहीं मिलेगी। हां, एक उपाय से मिल सकती है कि तुम शरीर और मन से ऊपर चले जाओ जैसे रात को गहरी नींद में चले जाते हो या आपरेशन हुआ हुआ हैं, टांग क़टी हुई है, दर्द होती है तुमको बेहोशी की दवा दी हुई है

तो क्या तुमको दु:ख का अनुभव होता है ? नहीं । अत: सुख कहां है ? शरीर और मन को भूल जाने में सुख है । इसका नाम नाम है । और मन को छोड़ कर जो धुन होती है उसका नाम सत्तनाम है । तुम लोग तो जागते हुए राम, राम, राम करते हो । कई माला फेरते-फेरते बातें करते रहते हैं, माला फिरती रहती है । यदि कोई व्यक्ति इस जीवन में रहता हुआ कर्म के चक्कर से बचना चाहता है तो केवल एक ही इलाज़ है कि वह शरीर और मन को छोड़ कर ऊपर चला जाये । मगर जो कर्म किया हुआ है वो तो शरीर में जो दु:ख होना है, होगा ही ।

मैं बहुत जिम्मेवारी को अनुभव करता हूं । मुझे मान, इज्जत और धन इत्यादि की आवश्यकता नहीं । मैंने संसार नहीं मांगा । मैं तो छोटी आयु से देखना चाहता था कि मेरा राम कहां है, मेरा मालिक कहां है, मैं कहां से आया हूं इस खोज में मेरी सारी आयु बीत गई । अब मेरी समझ में आया है कि मेरा राम कहां है ? मैं ही नहीं हूं तो राम को क्या ढूंढूं ! मुझे मालूम हो गया कि मेरा जो अहंपना है वह यहीं

समाप्त हो जाता है। अत: जो कुछ भी है सब राम ही राम है। जल, स्थल, ऊपर, नीचे सब जगह एक हस्ती है। यह राम निकला ! मैं क्या करता हूं ? अब मैं समाधि में था तो कहां था ? मैंने अपने आप को उसके अर्पण किया हुआ था जहां प्रकाश था न शब्द था। मेरे अन्दर केवल ऐसी हालत थी। लेकिन जब शरीर को कोई विशेष कष्ट होता है तो नानी याद आ जाती है। सुरत नहीं चढ़ती। अन्य सन्तों का मुझे पता नहीं।

मैं किसी को शिष्य नहीं बनाना चाहता तथा न ही मैं चाहता हूं कि कोई मुझे पूजे। मुझे गरज (स्वार्थ) नहीं हैं। मैं आपको सरल ढंग बताना चाहता हूं कि कुछ न करो। मैं क्या करता हूं ? कुछ भी नहीं। पहले बहुत किया। मैं भ. परिश्रम करते-करते मर गया। अब तो यही कहता हूं। शरणागत। अत: जो व्यक्ति इस मार्ग पर सच्चा होकर चलता है बेशक वह यह चिन्ता न करे कि उसका शब्द खुला हुआ है या नहीं। ज्यों-ज्यों उसका मन साफ होगा जब वह अन्दर ठहरेगा उसका मन काम

करना बन्द कर देगा तो अपने आप ही उसका शब्द खुल जायेगा। जब तुम अपने अन्दर सच्चे होकर चलोगे और प्रेम करके शरणागत होगे तो मन समाप्त हो जायेगा। जब मन समाप्त हो जायेगा तो अपने आप ही प्रकाश और शब्द आ जायेगा। इसमें परिश्रम करने की कोई आवश्यकता नहीं, आपको सरल उपाय बता दिया। लेकिन यह भी जिसके भाग्य में मालिक की दया है वह ही इसे समझ सकता है।

देखो, आज मैं आपको यही कहना चाहता हूं कि सच्चे बनो बिलकुल कुछ न करो। मैं अभ्यास के भी विरुद्ध हूं। सबसे पहले, अपने मन को सच्चा बनाओ, बस। चाहे तुम में लाख दोष हैं कुछ परवाह नहीं। जब अकेले बैठो अपने आप को सच्चे बना कर अपने दोषों को देख कर अपने आप को उसके शरणागत करो। बस! जब तक मन पवित्र नहीं है, मानव के मन के अन्दर प्रबल चाह और तड़प नहीं है तो कानों में उंगलियां डाल कर मर जाओ न तुम्हारे प्रकाश आयेगा न तुम्हारे मूर्ति या

रूप आयेगा। ज्यों-ज्यों तुम सच्चे बनोगे तुम्हारे मन की मैल दूर हो जायेगी, तुम दस व्यक्तियों में बैठकर शब्द गा सकते हो वहां तुम्हारी मैल नहीं जायेगी। अपने मकान में अकेले बैठकर प्रार्थना किया करो। मैं यही करता हूं। जहां तुम सच्चे बने प्रकृति तुम्हारे लिए दरवाजा खोल देगी। मेरा तो खोल देती है मुझे और मालूम नहीं। मैं केवल अपनी जानता हूं। अन्यों का हाल भी मैं बता चुका हूं। प्रतिदिन पत्र आते हैं। कबीर साहिब अपने शब्द में यही कहते हैं :—

कब गुरु मिलि हो सनेही आइ,
लोभ मोह का जार बना है, ता में रह्यो अरुझाय,
जाकी सांची लगन लगी है, सो वा घर को आइ।
सुरत समानी सबद कुंड में निरत रही लौ लाइ,
पिया बिनु यूँ प्यारी तलफै तलफ तलफ जिय जाय।

अब यदि कबीर होता तो मैं पूछता कि यह सन्त किसको पिया कहते हैं। मैं भी कभी पिया को मानता था। यह अज्ञान था। अरे प्रीतम तुम्हारा अपना ही आप है कोई दूसरा पिया नहीं, यह हमको

भ्रम है । मगर यह भ्रम जल्दी नहीं जाता । क्यों नहीं जाता ? मन के अन्तर जो बिचार है जब तक यह साफ नहीं होंगे यह भ्रम नहीं जायेगा । इस लिए यह जितना अभ्यास सहस्त्रदलकमल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भँवर गुफा इत्यादि हैं यह सब मन को निर्मल करने के लिए है तथा ये मन की ही अवस्थाएँ है । सहस्त्रदलकमल में भिन्न-२ प्रकार के ख्यालात मन से निकलते हैं । त्रिकुटी में केवल अपने इष्ट के साथ प्रेम अधिक हो जाता है तो वही मन साफ होता हुआ अनेकवाद को छोड़ कर, त्रिपुटी वाद द्वैतवाद और अद्वैतवाद को छोड़-२ कर इकट्ठा हो जाता है अर्थात् एक जगह ठहर जाता है । जब व्यक्ति प्रयत्न करता है तो मन छूट जाता है और आगे प्रकाश और शब्द है, शेष तुम्हारी ज़ात रह जाती है ।

आप लोग आ गये हैं । आज अन्तिम सत्संग है । मैंने आपको बहुत कुछ कह दिया । पहले संसार के मोह को छोड़ो । इस संसार में रहते हुए यदि संसार में फँसोगे तो दुःख उठाओगे । एक व्यक्ति आया

हुआ है, उसका लड़का नालायक है, वह बहिन को मारता है, माता-पिता को भी मारता है। फिर भी कहते हैं कि पुत्र घर वापिस आ जाये। रात मेरे पास आया। मैंने कहा—तुम पर धिक्कार है। ऐसी सन्तान को क्या करोगे ? जो सन्तान आज्ञाकारी नहीं उसको विष देकर मार दो। हम लोग मोह, माया में फंसे हुए हैं। हाय मेरा बेटा, हाय मेरा बेटा ! वो सोना जो कानों को दु:खाता है उसे मत डालो। पहले अपने मन की शान्ति है। मगर हम लोगों को माया ने इतना दबाया हुआ है जिसका कोई हिसाब नहीं। मोह में फंसे हुए हैं।

हम लोग दुनिया में फंसे हुए हैं। तो गुरु क्या करता है ? बाहरी गुरु का क्या कर्त्तव्य है ? तुमको सच्चाई बता करके तुम्हारे मन को इस चक्कर से निकाल देने की आवश्यकता है, और कुछ नहीं। मैं भी यही करता हूं। किसी के साथ, मोह न करो। अगर तुमने बच्चे का मोह छोड़ करके मेरे साथ मोह कर लिया तो क्या अन्तर है ? किसी ने पुत्र के साथ, किसी ने गुरु के साथ मोह किया। मेरी बात को सोचो। कोई पुत्र के मरने पर पुत्र के मोह में रोया, कोई पत्नी के मरने पर रोया, कोई गुरु के

मरने पर रोया। अन्तर क्या है ? सोचो ! एक प्रसिद्ध सन्त की जब मृत्यु हुई तो कितने व्यक्तियों ने आत्म-हत्या यर ली। उन व्यक्तियों की मृत्यु का जिम्मेवार कौन है ? उस परमसन्त ने जनता को साफ तौर से क्यों नहीं कहा कि गुरु शरीर नहीं है। मेरा जीवन चार दिन का है। मैं तुम लोगों को फ़कीर चन्द के जाल में नहीं फंसाना चाहता फ़कीर चन्द के जाल में फंसना, फंसाना गलत है। मेरी बात को सोचो कि मैं क्या कह रहा हूं । मैं तो कहता हूं कि मैं मर जाऊं तो आप नाचो । मोह सब का है। गुरु को मोह इतना ही है कि गुरु के सत्संग में बैठकर उसकी बात को सुनकर उस पर अमल करना यह गुरु का मोह है। और वास्तव में असल गुरु का मोह तुम्हारे अन्तर में है। वह गुरु जिससे तुमने मोह करना है वह शब्द रूप तुम्हारे अपने अन्तर है, तुम्हारा अपना आप है। मैं संसार को धोखा देना नहीं चाहता और यह नही कहता कि फ़कीर चन्द को पूजो :—

लोभ मोह का जार बनो है ता में रह्यो अरुझाय,
जाकी साची लगन लगी है सो वा घर को आइ।

इसकी वावत मैंने आपको बता दिया। यही मेरा अपना अनुभव था। चूंकि कबीर साहिब जी ने भी यही कहा अत: मैं प्रसन्न हूं कि मेरे जीवन का अनुभव उचित है। करना कुछ नहीं। यदि अभ्यास नहीं वनता तो कोई परवाह नहीं, अकेले बैठो। अपने हृदय में सच्चे दिल से अपने आपको उस परमतत्त्व के अर्पित कर दो। जो त्रुटियां आपने की हैं उनको स्वीकार करो। जहां तुम्हारा मन साफ हुआ प्रकृति तुम पर स्वयं दया करेगी। वस, यह Law व नियम है और कुछ नहीं। जब मानव सच्चा होकर पुकार करता है तो उसके मन के अन्दर Vaccum हो जाता है और प्रकृति की दया उसे आकर पूरा करती है। मगर यह चमत्कार या काम उनके होते हैं जिनके मन निर्मल होते हैं। अत: मन की पवित्रता बहुत आवश्यक है। यह बात है। मैं सोचता हूं कि क्या तुम मेरे पास से कुछ ले जा सकते हो ? हां, ले जा सकते हो। मेरे पास से तुम अज्ञान अर्थात् भ्रम दूर कर सकते हो। किसी सीमा तक जब तक बैठे रहोगे शान्ति मिलेगी। मगर जब तुम दूसरे व्यक्तियों से जाकर मिलोगे तो वह

शान्ति भंग हो जायेगी। मेरे जीवन की यह Research है। मेरी समझ में यह आया है कि संगत के प्रभाव का नियम (Law of Rediation) काम करता है। सच्च पूछते हो। मैं कहता हूं कि आप सत्संगी लोग मेरे शत्रु साबित हुए। यह मैं दर्दे दिल से कह रहा हूं। आप ने जान-बूझ कर शत्रुता नहीं की बल्कि प्रेम किया। लेकिन मेरे लिए वह हानिकारक बैठा। चारसौबीस, गन्दे, धोखेबाज जब आकर मुझे जफ्फी मारते हैं, मेरे पांव को हाथ लगाते तथा दबाते हैं, अगर मेरी Rediation तुम को जाती है तो क्या तुम्हारी Rediation मुझे नहीं आती ? मैं इसे अनुभव करता हूं। काश ! अगर संगत का यह प्रभाव मुझे पहले पता होता तो मैं कभी सत्संग न कराता। अब मैं कैसे बचता हूं ? इससे बचने का क्या उपाय है ? कि अपने स्वार्थ के लिए किसी से कुछ आशा नहीं रखना। बस, फिर मुझे कोई दोष नहीं। अत: मैं आपसे किसी से भी प्यार नहीं करता। न लड़के, लड़की से ही प्यार करता हूं। क्योंकि यदि मैं तुम से प्यार करूं तो तुम्हारे ख्यालात का प्रभाव मेरे ऊपर आयेगा। मगर

तुम्सारा प्रभाव तो मेरे ऊपर तब आयेगा जब मैं तुमसे प्रेम करूंगा और प्रेम स्वार्थ के लिए करूंगा। अत: मैं कोई गरज़ ही नहीं रखता। हां, तुम्हारे प्रेम के बदले मैं तुमको निष्काम प्रेम का उत्तर देता हूं। प्रेम करता हूं मगर दिल नहीं देता। यह मेरी समझ में आया है। जीवन के अनुभव ने मुझे यहां पहुंचाया है। मैं ऐसे करता हूं। पृथ्वीनाथ! गुरु बनना सरल नहीं है। इस संगत के प्रभाव से बड़े-२ महात्मा गिर गये। ऐ गुरुओ! ऐ महात्माओ! अपनी नीयत को साफ रख कर अपने आप का साधन करके, अपने आप को ठीक करके सत्संग कराया करो। क्योंकि जैसे आप होंगे आपकी Rediation लोगों पर जायेगी। सहारा लो। मैं नहीं चाहता कि मेरा आश्रय लो। जिस रूप में तुम्हारा विश्वास है कहीं भी जाओ, हिन्दू बनो, मुसलमान बनो इसकी मुझे कोई परवाह नहीं। मैं तो धर्मों के चक्कर से निकल गया। तुम लोग आते हो। मैं जिम्मेवारी अनुभव करता हूं। मैंने आपको सच्चाई बता दी। गुरु की duty क्या है? सच्चाई बताना, ज्ञान देना, रास्ता बताना। वह मैंने आपको

बहुत कुछ स्पष्ट कह दिया। दुआ करो अगली गुरु पूर्णिमा मुझे न आये। मैं इस संसार से उपराम हो गया हूं। कब तक जीऊंगा। 95 वर्ष की आयु हो गई। मगर पिछले किये हुए कर्म भोगने पड़ते हैं। तुम लोग आज जा रहे हो, मैं भी अमेरिका जा रहा हूं। जीवित रहा तो आऊंगा। क्या पता है।

परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज को अमेरिका में घटनाएं !

लेखक :— डा० हंसराज जी घई

अंश नं: 1

जब पिता जी मुझे श्रीनगर के दौरे पर मई मास में अपने साथ ले गये, उसी समय से उन्होंने जौड़ा साहिब तथा डा० परस राम जी को कहना प्रारम्भ कर दिया कि इस बार मैं घई को अपने साथ अमेरिका तथा कैनेडा ले जाऊंगा। बाद में मुझे भी आज्ञा हुई कि जल्दी पासपोर्ट बना लो। हज़ूर ने जो तिथि पासपोर्ट बनने के लिए निश्चित की थी उसी दिन पासपोर्ट बन गया और मैं कलकत्ता चला गया। वहां हज़ूर के पत्र तथा तार आते रहे कि मैं जल्दी श्री नन्दलाल जी के पास देहली वीसा

बनाने के लिए पहुंच जाऊं । मैंने प्रार्थना की कि मैं दिनांक 20 जुलाई को होशियारपुर में पहुच जाऊंगा । मैं जब 20 जुलाई को उपस्थित हुआ तो हज़ूर मेरा इन्तज़ार ही कर रहे थे । उसी दिन मेरी Seat 21-7-81 को रिजर्व की गई और मैं देहली के लिए रवाना हो गया । Visa बनने में कोई दिक्कत नहीं हुई । हां, टिकट बनने में श्री नन्दलाल जी को काफी परिश्रम करना पड़ा और उनके एक सत्संगी भाई की सहायता से वह समस्या भी हल हो गई तथा हम 27-7-81 को प्रात: साढ़े 4 की Flight से न्यूयार्क के लिए रवाना हो गये । उसी दिन रात के 1 बजे हम पिट्सवर्ग के लिए रवाना हो गये । न्यूयार्क में कई प्रेमी, सत्संगी और डा० आई. सी. शर्मा भी आये हुए थे । वहां से डा० रामदेव राव हम को अपने घर ले गये । मार्ग में पिताजी का स्वास्थ्य ठीक रहा । 28-7-81 की प्रात: से ही अमेरिका और कैनेडा के सत्संगियों के टैलीफोन आने शुरू हो गये और पत्र भी । 29-7-81 को श्री विश्वामित्र और उनके भाई श्री भीमसेन जी Trinidad से दर्शन के

लिए आये। उनको हज़ूर ने सत्संग दिया। शब्द था :—

गुरु रूप न समझे कोय, भ्रम में पड़े अज्ञानी।

सत्संग प्रारम्भ होने से पहले ही हज़ूर ने फरमाया कि सत्संग रिकार्ड कर लो शायद यह मेरा अन्तिम सत्संग हो। जल्दी में टेप नहीं हो सका। हम लोगों ने सोचा कि हज़ूर तो सदैव सत्संग के वचन फरमाते ही रहते हैं अत: फिर कर लेंगे। विश्वामित्र जी को फरमाया कि अब मैंने अपनी duty पूरी कर दी। मुझे अब गुरु बनने का कोई पाप नहीं है। इसके बाद और सत्संगी भी आते रहे और उनको हज़ूर सत्संग के वचन फरमाते रहे।

30-7-81 की शाम को हज़ूर ने खाना नहीं खाया। रात को बहुत खांसी हुई और बुखार भी हो गया। मेरी दबाई प्रभाव नहीं कर रही थी। डा० रामदेव जी ने भी दवाईयां दीं लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। बुखार तो कम हो गया लेकिन खांसी निरन्तर रही। आज्ञा हुई कि मुझे अस्पताल ले चलो। 31-7-81 को प्रात: ही हम Mercy Hospital

पिट्स वर्ग में चले गये । जाते ही हज़ूर को Test Room में दाखिल कर दिया गया और एक घण्टे के अन्दर सब Test के लिए खून, थूक, पेशाब इत्यादि ले लिया गया और हम को सातवीं मंजिल पर कमरा नं: 1570 में दाखिल कर दिया गया। मेरे ठहरने के लिए भी एक अलग विस्तर था । हज़ूर को जाते ही ग्लूकोश लगा दिया गया और बलगम निकालने का प्रबन्ध किया गया। 6-8-81 तक काफी बलगम निकल गई बुखार भी कम हो गया लेकिन पेशाब का कष्ट वर्दाश्त के बाहर था । हज़ूर ने मुझे भी सेवा का खूव अवसर दिया। मुझे इस बात की प्रसन्नता भी थी लेकिन उनके स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता भी थी। मैं एक सप्ताह तक सोया नहीं था तो हज़ूर ने फरमाया घई! तुम सो जाओ। सोते क्यों नहीं हो। मैंने अरज़ किया कि हज़ूर आपको कष्ट है, मुझे नींद आती ही नहीं। क्या करूं? कहने लगे–रामदेव! एक और नर्स रख लो। अगर घई को कुछ हो गया तो मैं कहां जाऊंगा? उसी दिन मुझे आज्ञा दी कि मैं राम देव के साथ उनके घर चला जाऊं। रात को उनकी तकलीफ

और बढ़ गई और दो सत्संग हज़ूर नै मानवता मन्दिर होशियारपुर के लिये लिखे और रामदेव जी को पूछा कि यदि मैं अमेरिका में चोला छोड़ दूं तो कितना खर्च होगा ? राम देव जी ने इसके बारे में अचिन्त रहने की विनती की। फिर कहने लगे- मेरा Prostrate Glands का औपरेशन करवा दो। क्या बहुत कष्ट होगा ? डा: रामदेव ने कहा—कि जितना कष्ट हज़ूर को अब हो रहा है इससे बहुत कम होगा। इसी सिलसिले में और जो Test करने थे वे प्रारम्भ हो गये। मैं सदैव साथ रहता था। Test सब Positive (ठीक) थे। किसी प्रकार का नुक्स नहीं था। लेकिन Prostrate Glands बहुत बढ़े हुए थे जिससे पेशाब बन्द हो जाता था जो कि Cathebar डाल कर निकालना पड़ता है। 10-8-81 को प्रौ: Rosen hive, उसकी पत्नी और लड़का दर्शन के लिए आये। डा० शर्मा भी उपस्थित थे। सत्संग फरमाया और रिकार्ड किया गया। इसकी टैप मैंने मन्दिर में जमा करा दी ही है।

हज़ूर का Prostrate Glands का औपरेशन दिनांक 12-8-81 को 12 बजे शुरू हो कर बाद

दोपहर 2 बजे समाप्त हो गया। औपरेशन सफल रहा। उस दिन डा: राव तथा उनके पिता श्री राजेश्वर राव जी कमरे में ठहरे तथा मुझे घर भेज दिया गया। नर्स भी वहीं कमरे में रही। 11 बजे रात तक हजूर होश में रहे तथा साढ़े 4 बजे प्रात: तक सोये रहे। यकायक नर्स ने देखा कि पिता जी का सांस बन्द हो रहा है। दिल के दौरे जैसी हालत हो रही है। उसने डा: को टैलीफोन करके इतलाह दी तथा एक मिनट के अन्दर दस expert हाजिर हो गये। जब वह सफल न हो सके तो उसी समय उनको Intcnsive care unit में ले जाया गया। जब मुझे पता चला तो मुझे डा: रामदेव के भाई कृष्णदेव अस्पताल ले आये।

हजूर डाक्टरी नुक्ता निगाह से बेहोश थे। लेकिन मैं साफ देख रहा था इसलिए मुझे बिलकुल घबराहट नहीं हुई। क्योंकि 6-8-81 को जब हजूर को बहुत कष्ट था और हजूर भी परेशान नज़र आते थे तो मैं घबरा गया। तो मुझे देख कर हजूर ने फरमाया कि घई ! मैं यहां मरने नहीं आया। इन

बचनों से मुझे बहुत हौसला रहा। इस लिए मैंने 10-9-81 को कैनेडा में अपनी लड़की को मिलने के लिए जाने का निश्चय किया। जिसके लिए रामदेव जी के परिवार वाले बहुत ज़ोर लगा रहे थे। लेकिन मैं कहता था कि मैं पिता जी को छोड़ कर कैसे चला जाऊं। 6-8-81 को एक और बात भी फरमाई थी कि घई! तुमको यह लाभ हुआ कि तुमको एक सन्त सत्तगुरु वक्त के शरीर की सेवा मिली, जो कि बहुत सौभाग्य का कारण होता है और मुझे यह लाभ हुआ कि मैं उस ऊंची से ऊंची अवस्था में साढ़े तीन घण्टे रहा। जब कि पहले कभी छ महीने में केवल एक-आध मिनट ही रह सकता था। किसी सत्संग में हज़ूर ने फरमाया था कि यदि इस अवस्था में कोई महात्मा एक या दो घण्टे रह जाये तो उसे चोला छोड़ना पड़ेगा। इस बात से मुझे जरूर थोड़ा बहुत सन्देह तथा घबराहट हुई थी। फिर यह भी फरमाते थे कि जब मैं चोला छोड़ूं तो अमुक दिन होगा। मेरे पास मेरा कोई रिश्तेदार और प्रेमी नहीं होगा। यह बात सत्य निकली। क्योंकि 12-9-81 को मेरे कैनेडा के लिए हवाई जहाज़ में

बैठने के कुछ ही देर बाद हज़ूर ने चोला छोड़ दिया। जब मुझे कैनेडा में हज़ूर के चोला छोड़ने का समाचार मिला तो मैं जल्दी ही अपनी Seat बुक करवा कर रविवार सायं ही अमेरिका आ गया तथा डा: रामदेव उनके पिता तथा प्रो: Rosen hive Air port पिट्सवर्ग पर आये हुए थे। सब की आंखों में आँसू भरे हुए थे। मुझ से भी न रहा गया। देखने की बात यह है कि किस प्रकार हज़ूर ने मुझे निरुत्साहित होने से बचाया। डा: रामदेव मुझे सीधे Funerol home जहां पर हज़ूर का मृतक शरीर एक शानदार सन्दूक में सजाया हुआ रखा था दर्शन हेतु ले गये।

[क्रमश:]

●★●

टूर प्रोग्राम हजूर मानव दयाल ईश्वर चन्द्र शर्मा जी महाराज

मानव दयाल जी महाराज अमेरिका से भारत दिसम्बर मास में आयेंगे। 8-12-81 की शाम को बम्बई में सत्संग होगा :—

12-12-81 शाम को आगरा में,
14-12-81 शाम को बनारस में,
16-12-81 शाम को दिल्ली में,
27-12-81 होशियारपुर में,

यदि कोई सज्जन किसी और नगर में बुलाना चाहें तो 22-12-81 से 24-12-81 तक उनके पास समय है।

सूचना

सब सज्जनों से प्रार्थना है कि मानव मन्दिर के बारे में पत्र व्यवहार करते समय अपना ग्राहक नम्बर अवश्य लिखा करें।

सूचना

मानव मन्दिर पढ़ने वाले सब सज्जनों को सूचित किया जाता है कि हज़ूर परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी हिज़ होलीनेस हज़ूर मानव दयाल जी शर्मा 16-12-81 को देहली पहुंचेंगे और 27-12-81 रविवार को मानवता मन्दिर होशियारपुर में सत्संग देंगे, जो सज्जन उनके वचनों और दर्शनों का लाभ उठाना चाहें वे समय पर पहुंच जायें।

—सम्पादक

सब मानव मन्दिर पढ़ने वाले सज्जनों से प्रार्थना है कि हज़ूर परम सन्त परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज क्योंकि इस असार संसार को छोड़ गये। इसलिए आगे के लिए उनके निजी नाम पर कोई मनीआर्डर, चैक अथवा ड्राफ्ट न भेजें। केवल सैक्रेटरी फ़कीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट के नाम भेजे जायें।

—सम्पादक

नकल पत्र जो हिज होलीनेस मानव दयाल जी शर्मा महाराज ने लिखा है ।

R. S.

3643 West 39th Street
Cleveland Ohio U. S. A.
30th Sept., 1981.

My dearest respected Sant Munshi Ram Ji,

Radha Swami and heartfelt regards,

I cannot believe that Pita Ji has left us. I feel his presence, his guidance, his love and his blessings every minute and every second. Your most affectionate and moving letter pierced my heart and my obstinate eyes which had not yet shed a single tear burstforth into uncontrolable streams. I

am shedding tears even while typing this letter to your goodself. I visited Pita Ji every day for full month eversince, he went into Samadhi. I and my Dharma Patni used to drive three hundred miles every day to have the Darshana of Pujya Pita Ji because Pittsburg is 150 miles from here. I did not want to burden Dr. Ramdev to stay at his house in Pittsburg As long as Pita Ji's Causal body was in the phy sical frame and we had his Darshan everyday, my mind was disturbed and I prayed to Pita Ji everyday to open his eyes which he did for me many times in the hospital. But the day he wound up his causal body and took Mahasamadhi, I received great courage and strength. Instead of being sorrowful, I felt an innər peace. When we went to see him lying in the beautiful casket in the funeral home, every one cried, Ramdev crled. Bhagwati my wife cried, but I did not. My vivek did not allow me to fell sorrowful on the auspicious occassion of Pita Ji's ascent to the throne of Parama Dhama. But my dearest own Self. "Bhagat

Ji" on reading your moving letter, my vivek has given way. I confess that I am crying crying, crying. I did not cry in Pttsburg even when Dr. Ghei embraced me. Pita Ji has taught us to be true and honest.\ You can publish this letter. But I am not emotionally unstable I can assure you that. I will fulfil my duty every minute and every second. You will live for hundred years.

Please carry on the Satsang and publicantion. I will be with you in December. I request you to come for Satsang in Delhi on the 16th December. Kindly announce that I will give Satsang along with you in Hoshiarpur on Sunday the 27th December, not on 28th which I wrote in my letter sent to you through Dr. Ghei. I will be your strongest supporter by the grace of Pita Ji. You are my heart, soul and Surat. I have all love and respect for you Pita Ji had written to me that after retirement I should come to the temple. However, I will do so earlier than that. I have already set up an organization for Satsangies of U.S.A. with Dr. Rao as the president. I have put you as

one of the director. I want two more directors from India. Please get the consent of Shri Anad Rao Ji and Nand Lal Ji for that and let me know. For a year or so, I will be coming twice to India for about three months. When the organization here stands on its own feet, I will stay with you for nine months in a year. We will talk in detail personolly. I will send articles and the chapter soon. Pita Ji is guiding us. His message will spread all over the world. Please publish my taped lectures which were sent to you with Dr. Ghei. I am awaiting your tapes. You should please carry on feeling that Pita Ji is temporarily in U.S.A. With regards.

Yours in HIM
Manav Dayal Ishawar Chandra Sharma.

अंग्रेज़ी पत्र का हिन्दी में अनुवाद

आदरणीय सन्त मुन्शी राम जी,

राधास्वामी !

मैं कदापि यह विश्वास नहीं कर सकता कि पिता जी हमें छोड़ गये हैं। मैं उनकी उपस्थिति, प्रेरणा, प्रेम और उनकी शुभ कामनाएं सदैव अनुभव करता हूं। आपका प्यार भरा पत्र मेरे मन पर बहुत प्रभावित हुआ है और मेरी कठोर आखें जिनमें अभी तक एक भी आंसू नहीं आया था उनमें आंसुओं की कभी समाप्त न होने वाली धारा बह निकली है। यह पत्र जो मैं आपकी सेवा में भेज़ रहा हूं उसे टाईप करते समय भी मेरी आंखों में आंसू जारी हैं। मैं, पिता जी जब समाधि में गये पूरा एक मास प्रतिदिन जाता था। मैं और मेरी पत्नी प्रति-दिन १५० मील की दूरी तय करके उनके दर्शन

को जाते थे । क्योंकि पिट्सबर्ग यहां से १५० मील की दूरी पर है । मैं वहां पिट्सबर्ग में डा० रामदेव राव के घर रह कर उन पर बोझ बनना नहीं चाहता था । जब तक पिता जी बीमारी के समय अपने मानवी चोले में रहे हमने प्रतिदिन उनका दर्शन किया । मेरा मन अस्त-व्यस्त था । और मैं प्रतिदिन पिता जी से विनती करता था कि वह अपनी आंखें खोलें । जो उन्होंने अस्पताल में कई बार आंखें खोलीं । लेकिन जिस दिन वह अपने शरीर को इकट्ठा करके महा समाधि में चले गये मुझे बहुत साहस और शक्ति मिली । शोक करने की अपेक्षा मुझे आन्तरिक शान्ति अनुभव हुई । जब हमने उनको अन्त्येष्टि क्रिया सम्बन्धी वाले कमरे में एक सुन्दर सन्दूक में लेटे हुए देखा तो प्रत्बेक प्राणी रोया । रामदेव रोया, मेरी पत्नी भागवती भी रोई लेकिन मैं नहीं रोया । पिता जी के परम धाम पधारने के शुभ अवसर पर मेरी बुद्धि ने शोक करने की अनुमति नहीं दी । परन्तु लेरे प्यारे भगत जी ! आपका यह हृदय वेधक पत्र पढ़ कर मेरा विवेक समाप्त हो गया । मैं मानता हूं कि मैं रो

रहा हूं, रो रहा हूं, रो रहा हूं । पिट्सबर्ग में जब डा: घई ने मुझे गोद में लिया तब भी मैं नहीं रोया पिता जी ने हमें सच्चे और ईमानदार बनना सिखाया है। आप यह पत्र प्रकाशित कर सकते हैं परन्तु मैं भावनाओं द्वारा विचलित नहीं होता और और मैं आपको यह विश्वास दिला सकता हूं कि मैं आपन कर्त्तव्य सदैव पूरा करूंगा । आप सौ वर्ष जीवित रहें।

कृपया आप सत्संग और प्रकाशन जारी रखें। मैं दिसम्बर में आपके पास आऊंगा। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप 16 दिसम्बर को दिल्ली में सत्संग पर आयें। कृपया आप घोषणा कर दें कि मैं आपके साथ होशियारपुर में 27 दिसम्बर को सत्संग कराऊंगा न कि 28 को जैसा कि मैंने डा० घई के पास आपको पहले लिख भेजा था और पिता जी की कृपा और आशीर्वाद से मैं आपका सबसे ज्यादा सहायक हूंगा। आप मेरे दिल आत्मा और सुरत हैं। मैं आपके लिए अति प्रेम और आदर रखता हूं। पिता जी ने मुझे लिखा था कि मैं रिटायर होने पर

मन्दिर में आ जाऊं। लेकिन मैं इस से भी पहले आने का प्रयत्न करूंगा। मैंने अमेरिका वालों को सत्संग देने के लिए एक संस्था बनाई है। डा: राव उसका प्रधान है। मैंने आपको डायरैक्टर बनाया है। मैं भारत से दो और डायरैक्टर बनाना चाहता हूं। कृपया श्री आनन्द राव जी महाराज तथा नन्दलाल जी महाराज से परामर्श लेकर मुझे पता देना। शुरू शुरू में एक वर्ष के अन्दर मैं लगभग दो बार भारत आऊंगा। मैं तीन महीनों के करीब ठहरूंगा। जब कि यहां वाली संस्था अपने पांव पर खड़ी हो जायेगी, मैं आपके पास वर्ष में 9 मांस ठहरूंगा। हम मिलने पर खुल कर बात करेंगे। मैं अध्याय और articles जल्दी भेज दूंगा। पिता जी हमें मार्गदर्शन कर रहे हैं। उनका सन्देश सारी दुनिया में फैलेगा। कृपया मेरे किये हुए भाषण जो डा: घई के हाथ भेजे थे, प्रकाशित कर देवें। मैं आपके टेपों का इन्तजार कर रहा हूं। आप अपने मन

में यही भाव रखें कि

आरज़ी तौर पर हैं। शुभ

्म सन्त परम दयाल श्री हज़ूर 108 फ़कीर चन्द जी महाराज, के ब्रह्मलीन होने पर

श्रद्धाञ्जलि–

परम सन्त देखा इक मैंने निराला,
सच्चाई का पुतला श्री फ़कीर चन्द प्यारा।
95 वर्ष आयु मुख अमृत वरसता,
अमृत पीने को पपीहा तरसता।
यतीमों, गरीबों, भूले भटकों का सहारा,
सच्चाई का पुतला, श्री फ़कीर चन्द प्यारा।
सुन्दर चेहरा मुख था नूरानी,
इस समय न कोई ऐसा देखा ज्ञानी।
ध्रुव वांग चमकेगा, श्री फ़कीर चन्द सितारा,
सच्चाई का पुतला, श्री फकीर चन्द प्यारा।
अमेरिका व इग्लैंड से देते दोहाई,
श्री फ़कीर चन्द की अमर वाणी देती सुनाई।
शहादत मानव मन्दिर, यह सुन्दर रसाला,
सच्चाई का पुतला, श्री फ़कीर चन्द प्यारा।

95 वर्ष का अनुभव खोल कर दिखाया,
मगर हमने बिलकुल नहीं लाभ उठाया।
किसी सन्त ने न ऐसा दिखाया नज़ारा,
सच्चाई का पुतला, श्री फ़कीर चन्द प्यारा।
अन्दरूनी कमाई सब खोल कर दिखाई,
मन मूर्ख सब माया बताई।
उसके ऊपर सुन्दर, खोल दिया चौवारा,
सच्चाई का पुतला, श्री फ़कीर चन्द प्यारा।
सुरत और शब्द का भेद सब को बताया,
प्रकाश तक है उन्होंने पहुंचाया।

फिर न ध्यान दे, उस अपना घर उजाड़ा,
सच्चाई का पुतला, श्री फ़कीर चन्द प्यारा।
हमारी बदकिस्मती वह अमेरिका पधारे,
हमारे लिए कष्ट वहां जा सहारे।

विस्तर पर पड़ कर भी, करते रहे उजारा,
सच्चाई का पुतला, श्री फ़कीर चन्द प्यारा।
आखिर समय शरीर वहां जा त्यागा,
सेवा कर वहां के सत्संगियों का भाग जागा।
होशियारपुर का सुन्दर छुप गया सितारा,
सच्चाई का पुतला श्री फ़कीर चन्द प्यारा।

जीवन मुक्त ऋषियों की है यह निशानी,
अपनी कभी न मानी लाभ-हानी।
सच्च सच्च कह दिया, बोल मुंह पर क़रारा,
सच्चाई का पुतला श्री फ़कीर चन्द प्यारा।

ईश्वर के दरबार से आई सवारी,
जब से उनको थी तकलीफ भारी।
नारद ऋषि ले गया साथ बजाता दो तारा,
सच्चाई का पुतला श्री फ़कीर चन्द प्यारा।

ऐसे ऋषि संसारियों को तारने को आते,
सदायें अमर वह नहीं कभी भूल पाते।
सदा संग हमारे उनके आशीर्वाद का सहारा,
सच्चाई का पुतला श्री फ़कीर चन्द प्यारा।

बार बार मेरी नमस्कार होवे,
हज़ूर की वाणी पढ़ कर मन मैल धोवे।
शरणागति का आप मुझे कर गये इशारा,
सच्चाई का पुतला श्री फ़कीर चन्द प्यारा।

मुलखराज वख्शी नगर बैठा है देता दोहाई,
ऐसा सन्त मिलेगा न हरगिज मेरे भाई।
पवित्र ज्ञान अग्नि से कर गये उजारा,
परम सन्त देखा इक मैंने निराला।

लेखक :— श्री मुलखराज
(रिटायर्ड स्कूल मास्टर)
वख्शी नगर, जम्मू-कश्मीर स्टेट।

—o:o—

नकल पत्र जो श्री धनी राम विहान एम.ए.,बी.एड. गवंनमैण्ट हाई स्कूल जोंकाला, जिला विलासपुर (हिमाचल प्रदेश) दिनांक 1-10-81 को मानवता मन्दिर होशियारपुर में आया।

श्रद्धाञ्जलि

फ़कीरी थी जिसकी वेनज़ीर,
सोग बार कर गई वफ़ाते फ़कीर।
पख समेट कर अलिल उड़ गया,
रौशनी की छोड़ गया पीछे लकीर।
नग़माये बेदारी वह सुनाता रहा,
थक चुका था उनका जईफ़ शरीर।
नूर का एक राजहंस था वह,
अलग कर गया दूध और नीर।
नगाहे कर्म से आंसू पीता रहा,
हरता रहा वह ज़माने की पीर।

उसका पैग़ाम पैग़ामे हक़ था,
कारवांने हक़ था वह अमीर ।
वह हद वैहद को पार किये था,
वह मुर्शदे आज़म था सुलतान फ़कीर ।
वह चिराग़ नहीं बुझता चिराग़ जलाये बग़ैर
शर्मा जी दयाल भी वह तसवीर ।
यह मुलके अदम नहीं मुलके अनाम जाते हैं,
इन पर नहीं चलते मौत के तीर ।
विहान की ख़ैराज़े अकीदत कबूल हो,
सब संवर जाती काश अपनी तक़दीर ।

अध्यात्म नाम निकेतन हमीरपुर

संचालक : सेवक मेजर वृज लाल (एम.

निकट पैट्रोल पम्प हमीरपुर (हि० प्र०)

श्रद्धाञ्जलि

(सन्त मिला-स्वामी मिला)

होशियारपुर शहर के मानव नगर में मानव मन्दिर आलीशान,
जहां विराजें परम दयाल जी अवतारी पुरुष महान् ।
सादा लोह, सादा बोली, सादा है पोशाक ।
सादा है सव रहन-सहन, वाणी मधु मिठास ।
परम तपस्वी, परम त्यागी, परम सन्त सरताज ।
परम ज्ञानी परम ध्यानी, परम प्रिय महाराज ।
जात धर्म और सम्प्रदाय, सव का करें सन्मान ।
मानव धर्म कहें धर्म हक़ीकी, सव का एक ईमान ।
परम दयालु परम कृपालु, परम स्नेही सन्त ।
मानव मन्दिर मानब झंडा, मानवता सत्संग ।
मानव कारण मानव वनकर, मानव धर्म सिखावें ।
राजा रंक और गृहस्थी त्यागी, एक सतह पर लावें ।
शब्द स्वरूपी, सत् स्नेही, दया सिन्ध गम्भीर ।

ब्रह्मलीन, विवेक प्रवीण, प्रगटे सन्त फ़कीर ।
सेवक अपना भाग सराहे, जिस दिन नवाया माथ ।
परम दयाल फ़कीर जी ने, जिस दिन पकड़ा हाथ ।
व्यास डेरे ने छुट्टी दे दी हो गई मेहर वड़ी ।
सम्प्रदाय से मुक्ति पा लयी, सोही सुलखणी घड़ी ।
त्रिकुटी गुफा और सच्चखंड देखे, देखे धाम अनामी ।
गुरु फ़कीर की दया मेहर से, सेवक देखे स्वामी ।
न किसी डेरे का न गद्दी का, न राधास्वामी निरंकारी ।
गुरु सावन का गुरु मुख सेवक गुरु फ़कीर का आभारी ।
बारह सितम्बर इक्कासी को, मानव पुजारी चले गये ।
अध्यातम हीरे लालों वाले, फ़कीर व्योपारी चले गये ।
अपना मिशन पूरा करके, निज धाम की याद करी ।
उड़ गये हंस हैं देश अपने को, आखिरी वार उडार भरी
संगत पर दया दृष्टि रखना, ऐ जाने वाले राही जी ।
राधास्वामी लेते जाना, सेवक सन्त सिपाही की ।

सितम्बर अंक से आगे]

ऐसी चमत्कारी घटना से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि फ़कीर बाबा को इन सिद्धियों का अनुभव इसलिए हो रहा था कि वह ईश्वर के असली रूप को पहचान जायें। इसी कारण जैसा कि हम अगले अध्याय में देखेंगे कि फ़कीर बाबा के सम्बन्ध में हर प्रकार की चमत्कारी घटनाएं ऐसी घटीं, जिनसे हज़ारों लोगों को लाभ पहुंचा। ऐसी घटनाओं का उल्लेख इस लिए करना भी ज़रूरी है कि एक सिद्ध पुरुष में ईश्वर की ऐसी शक्ति काम करती है, जो सभी को लाभ पहुंचाती है। फ़कीर बाबा के रूप के प्रकट होने से न ही केवल उन लोगों ने अपनी-अपनी कठिनाइयों में सहायता ली है, जो उनको जानते हैं और उनमें विश्वास रखते हैं, किन्तु कुछ ऐसे लोगों ने भी लाभ उठाया है जिन्होंने पहले फ़कीर बाबा का नाम तक भी नहीं सुना था। इस रहस्य का कारण अगले अध्यायों में स्पष्ट हो जायेगा।

●★●

अध्याय सातवां

अन्य चमत्कारी घटनाएं तथा सच्चा ज्ञान

फ़कीर बाबा सद् पुरुष हैं, बड़ी-बड़ी कठिनाइयों में भी वे कभी सच्चे मार्ग से पीछे नहीं हटे। उन्होंने अपने गुरु होने का कभी भी दुरुपयोग नहीं किया और न ही गुरुपने को कभी धन कमाने का साधन बनाया। इसमें तनिकमात्र भी सन्देह नहीं कि उनके जीवन में अनेकों विचित्र चमत्कारी घटनाएँ घटी हैं। उनके अनुयायी तो प्रतिदिन विचित्र चमत्कारी घटनाओं का अनुभव करते हैं और उनकी अनुपस्थिति में भी उनके रूप के साक्षात् दर्शन करते हैं। फ़कीर बाबा इन चमत्कारी घटनाओं के घटने को झूठा नहीं बतलाते, उनके अनुसार ऐसी घटनाएँ घटती हैं, परन्तु वह ऐसी घटनाओं को बहुत महत्त्व नहीं देते। उसका कारण यह है कि वह तो उस अवस्था को प्राप्त कर चुके हैं जो चमत्कारों से परे

है । वे कभी अपने अनुयायियों को भुलावे में नहीं रखना चाहते और उन्हें स्पष्ट बता देते हैं कि वह स्वयं कहीं नहीं जाते, जो लोग उनके रूप को देखते हैं वह उनके अपने मन की शक्ति तथा विश्वास के कारण ही होता है । फिर भी मैं यहां यह बता देना ठीक समझता हूं कि फ़कीर बाबा के प्रकट होने की घटनाएँ बहुत ही विचित्र तथा आकर्षक हैं । ऐसी घटनाओं की कोई वैज्ञानिक या डाक्टरी व्याख्या नहीं दी जा सकती और न ही ऐसी घटनाओं को अन्धविश्वास पर ही आधारित माना जा सकता है । इसका कारण यह है कि जिन लोगों को फ़कीर बाबा का रूप भयंकर मुसीबतों के समय प्रकट हुआ और अब भी हो रहा है, वे सभी अनपढ़, गँवार या अन्धविश्वासी नहीं हैं । उनमें से अधिकतर पढ़े-लिखे, विद्वान्, डाक्टर, इन्जीनियर और ख्याति-प्राप्त व्यक्ति भी हैं । मुझे व्यक्तिगत रूप में फ़कीर बाबा के निकट रहने तथा उनकी अनुपस्थिति में भी उनकी उपस्थिति को अनुभव करने के कई अवसर प्राप्त हुए हैं । मेरे मन में रूप के प्रकट होने के प्रति यदि कोई सन्देह होगा भी, वह भी 1972 क.

एक घटना के बाद जाता रहा। यह 1972 की घटना है। फ़ोरेस्ट वर्जीनिया के एक विख्यात डाक्टर (जो फ़कीर बाबा के परम भक्त हैं और जिनका पूरा परिवार फ़कीर बाबा को परम सद् पुरुष मानता है) विलियम मेकेब ने अपने विशाल तथा सुन्दर घर में एक और बहुत बड़ा बेडरूम बनवाया और उसमें सर्व प्रथम सोने के लिए मुझे (न्यूपोर्ट-न्यूज़ वर्जीनिया से जो फ़ोरेस्ट से 200 मील दूर है) न्यौता दिया। मैं उस समय वहां एक कालेज में पढ़ा रहा था। मैं और मेरी पत्नी शाम को 5 बजे के बाद वहां से रवाना हुए और रात के दस बजे डाक्टर मेकेब के घर पहुंचे। उस समय डाक्टर मेकेब अपने एक मरीज़ को देखने के लिए गये हुए थे। मैं 5 घण्टे कार चलाने के कारण थका हुआ था इस लिए डाक्टर मेकेब की सुन्दर तथा विदुषी पत्नी ऐनिस ने हम दोनों को अपने नये कमरे में ले जा कर हमारा सामान वहां रखा और कहा कि हम अब सो जायें और डाक्टर मेकेब को प्रातःकाल ही मिलें। दूसरे दिन प्रातः को जब सब बच्चे नाश्ता ले कर अपने-2

स्कूलों में चले गये तो डाक्टर मेकेब ने बड़ी गम्भीरता से कहा "डाक्टर शर्मा, क्या आप रात को आराम से सोये ?" मैंने उत्तर दिया "हां विलियम बहुत आराम से सोये हम दोनों, तुम्हारे घर का यह भाग बहुत ही सुन्दर है" विलियम मेकेब थोड़ी देर चुप रहने के बाद फिरबोला "क्या आप रात को दो बजे मेरे कमरे में तो नहीं आये जहां मैं रात को सो रहा था ?" मैं चकित रह गया और बोला, "नहीं ! नहीं तो, मैं तो थका हुआ होने के कारण गहरी नींद सो रहा था उस समय। रात को दो बजे भला मैं क्यों आता तुम्हारे कमरे में ?"

इस पर विलियम थोड़ा मुस्करा कर बोला, "डाक्टर शर्मा! मुझे बावरा मत समझो। मैं सौगन्ध खा कर कहता हूं कि रात को दो बजे के लगभग आप मेरे कमरे में आये, आप मेरे कमरे में पड़ी हुई मेज़ पर बैठ गये आपने प्राणायाम किया और फिर 20 मिनट तक वहां समाधि लगाई। मैं सोच रहा था क्या मैं स्वप्न देख रहा हूं ? परन्तु वह स्वप्न नहीं था। मैं अपने बिस्तर से उठा साथ वाले

ग़ुसलखाने से जा कर एक गिलास पानी भर लाया। वह पानी पिया और गिलास को कमरे की छोटी मेज़ पर रख दिया। फिर देखा, आप गहरी समाधि में थे। मैंने भी ध्यान लगाने की कोशिश की। फिर आंख खोली, आप तब भी समाधि में थे, मैं आपको देखता रहा। फिर आप उठे और क्षण भर में अदृश्य हो गये और मैं देखता रह गया। प्रात:काल को जब उठा तो देखा कि वह गिलास जिससे मैंने पानी पिया था उसी मेज़ पर ही था जिस पर मैंने उसे रात को रखा था। इसका मतलब यह है कि जो कुछ मैंने रात को देखा था वह स्वप्न नहीं था, सत्य था। आप कहते हैं कि आप सो रहे थे उस समय। तो बताइए डाक्टर शर्मा, जो रात को मेरे कमरे में आया, वह कौन था?''

एक पढ़े-लिखे विद्वान् तथा विख्यात डाक्टर के मुँह से ऐसी बातें सुन कर मैं भौंचक्का रह गया और तब मुझे एक दम फ़कीर बाबा का ध्यान आया और मुझे पक्का विश्वास हो गया कि फ़कीर बाबा के ये वचन कि प्रकटीकरल मन की शक्ति के कारण

ही होता है, शतप्रतिशत सत्य हैं। क्योंकि मैं डाक्टर विलियम मेकेब को रात के समय नहीं मिल सका था उनकी प्रबल इच्छा मुझे मिलने की थी इस लिए रात के समय उनकी मन की शक्ति ने मेरे रूप को बना लिया। इस घटना के बाद तो मुझे तनिकमात्र भी सन्देह नहीं रहा कि फ़कीर बाबा का रूप एक को नहीं बल्कि सैकड़ों व्यक्तियों को प्रकट होता है। मैं तो साधारण व्यक्ति हूं, वह तो सद्‌पुरुष हैं। फ़कीर बाबा का रूप विचित्र तथा भयंकर परिस्थितियों में लोगों को प्रकट ही नहीं होता बल्कि उनको मुसीबतों से बचाता भी है और उनकी मनोकामनाएं भी पूरी करता है। एक ऐसी विचित्र घटना जो देहली में घटित हुई, उसकी सूचना फ़कीर बाबा को मेरे सामने ही दी गई। कुछ वर्ष पहले की बात है, फ़कीर बाबा देहली में श्री एच. सी. गुप्ता के घर सत्संग दे रहे थे, सत्संग के पश्चात् सब व्यक्ति बारी-2 से फ़कीर बाबा के पास आ कर उनके चरण छू कर आशीर्वाद ले रहे थे। वे सभी फल आदि भेंट कर रहे थे और साथ ही मानवता

मन्दिर के लिए एक, दो या पांच रुपये की भेंट भी दे रहे थे। सभी को ट्रस्ट की और से रसीद भी दी जा रही थी। फ़कीर बाबा अपने लिए उसमें से एक पैसा भी नहीं लेते।

जब लगभग सभी सत्संगी आशीर्वाद ले कर जा चुके थे एक ग़रीब सा दिखने वाला अधेड़ व्यक्ति आगे बढ़ा और फ़कीर बाबा के पांव छू कर 50 रुपये उनके चरणों में रख दिये। फ़कीर बाबा ने जब उ रुपये देखे तो बड़ी नम्रता से बोले, "भले पुरुष ! तुम इतना धन मुझे क्यों दे रहे हो ? तुम्हारी माली हालत अच्छी नहीं लगती। इस धन को तुम अपने परिवार पर खर्च क्यों नहीं करते ? देखो भाई, सबसे बड़ा धर्म है अपने परिवार का अच्छी तरह से पालन-पोषण करना। तुम यह धन वापिस ले जाओ।" अधेड़ व्यक्ति नम्रता से बोला, "ऐ मेरे मालिक ! मैं केवल इसी भेंट से ही आपकी उस अपार दया का बदला देने की कोशिश कर रहा हूं जो आपने मेरे ऊपर पिछले सप्ताह में की। दयालु मालिक, आपने मेरे घर की आग बुझाई।" यह बात सुन कर [शेष क्रमश: